01. दादी जी के महावाक्य

हरेक अपने से पूछें कि हम बाबा के पास किस लिए आये हैं? हम सब यहाँ आये हैं योग कमाने। योग ही हमारी पढ़ाई का सार है जिसको बाबा कहते हैं मन्मनाभव। गीता के भी आदि और अंतिम यही महावाक्य हैं। तो हमें प्रतिदिन यह चैक करना है कि मेरा घाटा और फ़ायदा कहाँ तक है? कितना हमने योगबल जमा किया? रोज़ अपने से पूछो कि मैं यहाँ किस लिए बैठा हूँ? बरोबर मेरी यह कमाई हो रही है? वह शक्ति बढ़ती जा रही है या घटती जा रही है? योगी के लिए फर्स्ट है प्युरिटी। प्युरिटी की सब्जेक्ट में कितनी मार्क्स हमने जमा की है? चैक करना है कि योग के बीच कोई विघ्न तो नहीं आता है?

जैसे बाबा ने कहा तुम बच्चे यहाँ आये हो अपनी झोली भरने लेकिन देखना झोली में छेद तो नहीं है? लीक तो नहीं होती? अगर प्युरिटी की वृत्ति सूक्ष्म कम्पलीट होगी तो लीक हो नहीं सकती। इसके लिए सदैव भाई–भाई की स्नेह की वृत्ति चाहिए। अगर हम कहते हैं कि हम प्यार के सागर के बच्चे हैं तो अपने से पूछो कि हम कहाँ तक प्रेम स्वरूप बने हैं? हम आत्मा स्नेह स्वरूप हैं। अगर स्नेह की सब्जेक्ट में ज़रा–सी लीकेज़ होगी तो बाप स्नेह की लाईन टूट जायेगी। स्नेह की लाईन आपस में भी टूटी तो अन्दर वह ठक–ठक करती रहेगी। फिर योग की वा स्नेह स्वरूप की अनुभूति हो नहीं सकती।

इस बार बाबा का यही एक मीठा बोल था कि बच्चे, तुम्हें हर प्रकार से रिटर्न देना है और रिटर्न जर्नी पर चलना है। बाबा ने जो दिया हैः ज्ञान, प्रेम, शक्तियाँ, उन सबका रिटर्न दो और रिटर्न अर्थात् वापस चलने की तैयारी करो। इसके लिए मुख्य है समेटने की शक्ति। अब इस शक्ति की परसेन्टेज को बढ़ाओ। देखना है कि हम घर जाने के लिए कम्पलटी रेडी हैं? बाबा ने जो ऋण दिया है वह रिटर्न कर रहे हैं तथा जाने की तैयारी कर रहे हैं? यही चार्ट चैक करो।

हम यहाँ आये हैं योग कमाने। योग का चार्ट बढ़ाते–बढ़ाते हमें कर्मातीत बनना है। तो अपने से पूछोः कर्मातीत बनने के लिए हमारे सारे हिसाब चुक्तू हो गये हैं? कोई भी पंछी किसी भी घड़ी उड़ सकता है। इस श्वास का कोई भरोसा नहीं। इसलिए हमेशा अपना खाता कम्पलीट कर रखना है।

बाबा हम बच्चों के तक़दीर की जितनी महिमा करता, उतना हमें भी दिन–रात यही योग कमाने की फ़िकर रहती है या अलबेले रहते हैं? अगर योग का अनुभव होगा तो अतीन्द्रिय सुख में मस्त रहेंगे। कर्म तो करना ही है। लौकिक में भी कर्म करते हैं और अलौकिक में भी कर्म करते हैं परन्तु अन्तर क्या है? कर्म में रहते मेरे योग का पोतामेल क्या है, चैक करना है। हम यहाँ कर्म के लिए ही नहीं बैठे हैं। हम बाबा के बने हैं भविष्य 21 जन्मों की प्रालब्ध जमा करने, योग का चार्ट बढ़ाने। अगर हमारे योग का चार्ट ठीक है तो हम अपने पुरुषार्थ से सदा संतुष्ट रहेंगे। नहीं तो कहेंगे चल तो रहे हैं, निभा तो रहे हैं...। उस मस्ती से नहीं बोलेंगे। तो खुद से पूछना है कि मेरी चढ़ती कला कहाँ तक है? उसमें कोई लीकेज़ तो नहीं है? अच्छा। ओम् शांति।